भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए २२-२८ अगस्त, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

अगस्त, २०१६	वास्तविक वर्षा (मिमी)								मौसम विभाग व्दारा संभावित वर्षा (मिमी)					
दिनांक	11to17	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	
पंजाब														उत्तरी क्षेत्र में कपास की फसल शीर्ष गूलर विकास अवस्था में है| विगत तीन सप्ताह से सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से काफी कम है| भटिंडा में सफ़ेद मक्खी, जैसिड तथा फूलकीट (थ्रिप्स) जैसे रस चूषक कीटों की संख्या सर्वेक्षण किए गए 29 गावों के सभी स्थलों पर आर्थिक हानि स्तर से कम है| बेहलेवाल तथा किला नाऊ गावों बीटी संकर आरसीएच-773 पर एक-एक स्थान को छोड़कर फरीदकोट में रस चूषक कीटों का ग्रसन 28 स्थलों पर कम पाया गया जो आर्थिक हानि स्तर से कम था| पत्ता मरोडिया रोग ग्रेड-I से ग्रेड-III के मध्य दर्ज किया गया| जीवाणु झुलसा रोग कपास पर देखा गया है| यदि वर्षा अथवा सिंचाई के बाद आकस्मिक मुरझान रोग देखा जाता है तो पंजाब कृषि विश्वविद्यालय की सिफ़ारिशों के अनुसार प्रभावित पौधों पर कोबाल्ट क्लोराइड 10पीपीएम का छिड़काव लक्षण दिखाई देने के कुछ घंटों में हीं करें | हिसार में सफ़ेद मक्खी तथा थ्रिप्स की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम तथा जैसिड संख्या खेदार तथा मधोसिंहाना
भटिंडा	0	0	5	0	0	18	0	0	4	4	0	7	9	
फिरोजपुर	8	0	5	0	0	0	0	0	4	4	0	7	9	
मुकतसर	56	0	0	0	0	0	0	0	4	4	0	7	9	
मानसा	9	0	0	0	0	0	0	0	9	0	0	0	7	
हरियाणा														
सिरसा	3	0	1	0	0	3	0	0	12	0	4	0	14	
हिसार	5	0	2	0	0	0	0	0	12	0	4	0	14	
फ़तेहाबाद	9	0	0	0	0	0	0	0	12	0	4	0	14	
राजस्थान														
हनुमानगढ़	1	0	1	0	0	0	0	0	10	11	12	10	8	
श्रीगंगानगर	5	0	3	0	1	0	0	1	10	11	12	10	8	
बांसवाड़ा	13	0	0	0	24	97	19	33	8	8	9	10	8	

गावों के दो स्थानों में आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई| उसी प्रकार *सोलेनोप्सिस* मिलीबग की संख्या नगण्य रही| किसानों को सलाह दी जाती है कि *स्पोडोप्टेरा,* जैसिड तथा सफ़ेद मक्खी के प्रकोप के लिए कपास के खेतों की निगरानी करते रहें|

श्रीगंगानगर में सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम तथा जैसिड और थ्रिप्स की संख्या पाँच गावों, यथा' साधुवाली, वनवाई, कालिया, सुजावलपुर तथा कोठा में सभी स्थलों पर बीटी संकरों आरसीएच-773, बायो-6588 तथा बायो-6488 पर आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड की गई| वर्तमान मौसम जैसिड तथा सफ़ेद मक्खी की संख्या वृद्धि के लिए अनुकूल है| किसानों को सलाह दी जाती है कि यदि धब्बेदार गूलर की सूँडी का प्रकोप देसी कपास पर आर्थिक हानि स्तर को पार करता है तो फसल पर कीटनाशक का छिड़काव करें| राजस्थान के बारनी इलाकों में तीन गावों, यथा, छोटीसरवा, तिमेरा तथा तांबेसरा के सभी स्थलों पर सफ़ेद मक्खी तथा थ्रिप्स की संख्या बीजी-II संकरों काशीनाथ, पारस सुदर्शन तथा एक्सेल कॉट पर आर्थिक हानि स्तर से कम तथा जैसिड की संखा अधिक दर्ज की गई|

उड़ीसा													
कोरापुट	56	17	0	0	1	1	0	5	11	22	38	56	41
कालाहांडी	42	7	3	0	0	0	3	2	0	16	41	48	34
बोलांगीर	25	10	3	0	0	0	4	1	3	20	14	16	31

कपास की फसल की सक्रिय कलिकायन अवस्था में मौसम गर्म तथा आर्द्र (नम) बना हुआ है| चेंपा (एफिड), जैसिड, अर्द्ध कुण्डलक इल्ली तथा टिंड्डों का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से कम रिकार्ड किया गया है| किसानों को सलाह दी जाती है कि फसल में खरपतवार नियंत्रण, 25%नत्र की मात्रा का मृदा अनुप्रयोग तथा पौधों पर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें| रस चूषक कीटों के नियंत्रण के लिए फसल पर नीम तेल का छिड़काव किया जा सकता है| गूलर की गुलाबी सूँडी की सक्रियता के निरीक्षण के लिए फीरोमोन ट्रैपों को स्थापित किया जा सकता है|

गुजरात													
अमरेली	0	0	0	1	0	0	0	0	16	15	4	3	13
भावनगर	1	0	0	5	0	0	0	0	6	14	0	0	13
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	18	18	0	0	0
राजकोट	1	0	0	0	0	0	0	0	16	15	0	0	3
भरूच	17	0	0	3	1	0	0	0	26	8	15	0	4
सबरकांठा	12	0	0	0	2	6	13	36	79	59	18	0	0
सुरेन्द्रनगर	7	0	0	0	0	0	0	0	16	9	6	0	4
अहमदाबाद	8	0	0	1	1	2	3	2	46	35	0	0	13
वडोदरा	24	0	0	0	6	10	2	10	51	11	8	0	4
पाटन	3	0	0	0	0	0	1	20	32	27	12	11	0
मेहसाना	2	0	0	0	1	4	3	14	79	54	14	0	0
मध्यप्रदेश													
खरगोन	14	0	0	0	4	25	1	8	36	6	3	0	0
धार	19	0	0	0	13	69	13	11	39	10	7	0	0
खंडवा	9	0	0	0	5	7	3	18	44	9	0	0	0

फसल फलन अवस्था में प्रवेश कर रही है| कपास के खेतों को खरपतवारों से मुक्त रखें| थ्रिप्स तथा जैसिड का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से कम है| जूनागढ़ में गूलर की गुलाबी सूँडी की संख्या 2 से 11 सूँडी/20 गूलर रिकार्ड की गई| जूनागढ़ के 04 गावों, धोराजी, सुखपुर, मखवाडी तथा लिंबुड़ा, में किए गए सर्वेक्षण में बीजी-II संकरों, यथा, गोपाल बीजी-II, अंकुर-3028, राशी-659 तथा गज़ब में सफ़ेद मक्खी तथा जैसिड की संख्या कम तथा गुलाबी सूँडी की संख्या सभी चारों स्थलों में आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई| सौराष्ट्र क्षेत्र में अगेती बोई गई कपास की फसल में गुलाबी सूँडी की क्षति दर्ज की गई| सूरत में उमरपाड़ा गाँव के सभा स्थलों में अजीत-155 बीजी-II के पर जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड की गई| अगेती बोई गई कपास की फसल पर 'कपास मेन्यूअल' में दी गई सिफ़ारिशों के अनुसार कीटनाशकों का छिड़काव किया जा सकता है| किसी भी रोग का संक्रमण दर्ज नहीं किया गया है| यदि गुलाबी सूँडी के पतंगों की संख्या कम है तो इन्हें बड़े पैमाने पर पकड़ने के लिए फीरोमोन ट्रैप@10-20 की संख्या में प्रति हेक्टर फसल में स्थापित करने की किसानों को सलाह दी जाती है|

प्रदेश के सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में रुक-रुककर होने वाली न्यूनतम वर्षा रिकार्ड की गई है| इस वर्षा से कपास के विकास तथा वृद्धि में सहायता मिली है| अगेती बोई गई कपास के इलाकों में नत्रयुक्त उर्वरकों का 38 किग्रा.प्रति हेक्टर, फॉसफोरस उर्वरकों का @20-30किग्रा./हे तथा पोटाश 10-20किग्रा./हे की दर से इन उर्वरकों की दूसरी मात्रा का मृदा अनुप्रयोग किया गया| पछेती बोई गई फसल के इलाकों में नत्रयुक्त उर्वरकों की पहली मात्रा 38 किग्रा./हे दी गई|

सविराम तथा हल्की वर्षा होने के कारण अपनी फसल को खरपतवार मुक्त रखने के लिए किसानों को पर्याप्त समय मिला लगभग सभी कपास क्षेत्रों में रस चूषक कीटों, जैसिड तथा सफ़ेद मक्खी, की उपस्थिति दर्ज की गई| किसानों को सलाह दी जाती है कि आवश्यकतानुसार सर्वांगी कीटनाशकों/नीओनिकोटीनाइड्स का छिड़काव करें| रोगों का प्रकोप दर्ज नहीं किया गया है|

महाराष्ट्र													
धुले	9	0	0	0	0	5	0	0	10	4	2	1	0
नांदूरबार	35	0	0	3	4	6	0	2	10	4	2	1	0
जलगांव	7	0	0	0	1	1	0	0	5	4	0	1	0
अहमदनगर	2	0	0	0	0	0	0	1	10	7	2	1	2
औरंगाबाद	1	0	0	1	0	0	0	0	2	1	0	0	0
जालना	0	0	0	1	0	0	0	0	6	0	0	3	0
बीड़	4	0	0	1	0	0	2	0	0	0	0	5	0
नांदेड़	8	0	0	0	1	0	0	4	0	0	0	0	6
परभणी	4	0	0	0	0	0	0	3	2	0	0	3	0
हिंगोली	2	0	0	1	0	0	0	12	0	0	0	0	4
बुलढाना	17	0	0	0	1	0	1	0	6	4	1	0	0
अकोला	15	0	0	0	0	1	0	0	2	2	1	0	0
वासिम	2	0	0	0	0	0	1	0	2	1	1	0	2
अमरावती	12	0	0	0	0	1	0	1	15	4	2	2	3
यवतमाल	2	0	0	0	0	0	0	3	1	2	1	0	0
वर्धा	16	0	0	0	0	0	0	0	2	4	1	0	1

महाराष्ट्र में कपास की फसल शीर्ष वानस्पतिक अवस्था से निकलकर फलन अवस्था में है| पुष्पन अवस्था में गूलर की गुलाबी सूँडी की समस्या आ सकती है| इसके लिए अगस्त तथा आगामी महीने में इस कीट की निगरानी के लिए फसल में फीरोमोन ट्रैप स्थापित करें| अकोला में खरपतवारों का प्रकोप अधिक है| रसचूषक कीटों में, जैसिड तथा फूलकीटों(थ्रिप्स) की संख्या क्रमश:05 तथा 07 गावों में राशी-659, बिनदास्त तथा अजीत-155 जैसे बीटी संकरों में आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई| छिट-पुट स्थलों में एल्टरनेरिया पत्ती धब्बा रोग देखा गया है| मानसून-पूर्व बोई गई फसल में गुलाबी सूँडी की उपस्थिति दर्ज की गई है| नांदेड़ में बुआई के 60 दिनों पश्चात बारानी कपास में रिंग विधि से अथवा गड्ढा करके @36 किग्रा/हे की दर से नत्र का मृदा-अनुप्रयोग करें| सर्वेक्षण किए गए सभी आठ गावों में जैसिड तथा फूलकीट की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई है| नांदेड में गुलाबी सूँडी का प्रकोप रिपोर्ट किया गया है तथा कपास मेन्यूअल में दिए गए नियंत्रण उपायों को युद्ध स्तर पर अपनाएँ|

नागपुर	6	0	0	0	0	0	0	0	7	2	1	0	5	
चन्द्रपुर	11	0	0	0	0	1	1	1	7	2	0	0	1	
तेलंगाना														बारानी कपास फलन अवस्था में है| विरामी वर्षा होने से फसल स्वस्थ है| रोगों व नाशीकीटों का प्रकोप दर्ज नहीं किया गया है|
आदिलाबाद	4	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3	4	3	
वारंगल	6	0	0	0	0	0	0	0	5	6	5	10	16	
खम्मन	3	0	0	0	0	0	0	2	5	8	12	12	18	
कारिंगर	11	0	0	0	0	0	1	0	8	4	3	5	12	
नालगोंडा	1	0	0	0	0	0	0	0	3	5	4	10	15	
महबूबनगर	6	0	0	0	0	0	0	0	4	4	3	10	4	
आंध्रप्रदेश														फसल शीर्ष वानस्पतिक अवस्था में है| गुंटूर जिले के 10 गावों में जादू, भक्ति तथा आरसीएच-659 बीटी संकरों पर किए गए सर्वेक्षण में सभी स्थलों में केवल फूलकीट (थ्रिप्स) की संख्या ही आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई| जून तथा जुलाई में बोई गई फसल में गुलाबी सूँडी का प्रकोप नहीं पाया गया लेकिन ग्रीष्मकालीन फसल में, प्रकाशम, नेल्लोर तथा अनन्तपुर जिलों के कुछ स्थलों में यह नाशीकीट आर्थिक हानि स्तर से अधिक संख्या में रिकार्ड किया गया| गुलाबी सूँडी के प्रकोप के नियमित निरीक्षण के लिए फीरोमोन ट्रैप का प्रयोग करें| रोगों का प्रकोप दर्ज नहीं किया गया है| कार्यिकीय लाल पत्ती रोग विभिन्न बीटी संकरों में सूखा की स्थिति के चालू रहने के बावजूद भी जलवायु के उतार-चढ़ाव के कारण भिन्न-भिन्न तीव्रता में देखा गया है|
गुन्टूर	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	5	8	
प्रकासम	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	5	8	
कर्नाटक														अगेती बोई गई फसल 70 से 80 दिनों की है| अधिकांश क्षेत्रों में

धारवाड़	21	3	1	0	0	0	3	5	5	14	6	5	6
हवेरी	7	0	0	0	1	0	4	2	2	1	3	3	1
मैसूर	12	1	2	0	0	0	3	1	4	3	4	7	7

फसल 60 से 65 दिनों की है| अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में फसल कलिकायन तथा पुष्पन की प्रारंभिक अवस्था में है| अगेती बोई गई फसल पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में है| विगत सप्ताह बादलों के साथ- साथ बूँदा-बांदी होती रही| बेलागवी तथा धारवाड़ जिलों के कुछ भागों में तेज हवाएँ भी चलीं| हवेरी, बेलगाम तथा धारवाड़ जिलों के अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में रस चूषक कीटों तथा प्ररोह-घुन का प्रकोप विद्यमान बना रहा | धारवाड़ में सभी रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर से नीचे दर्ज की गई| दूसरी ओर सर्वेक्षण किए गए 10 गावों में से 06 गावों, यथा, गीगालुरु, कामानाहल्ली, बंकापुर, वरदाहल्ली तथा बयादगी, में गुलाबी सूँडी की संख्या बीटी संकरों, एमआरसी-7383 तथा एमआरसी-7351 में आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई है| रायचूर जिले में सूखा मौसम बना हुआ है| सर्वेक्षण किए गए 12 गावों में बीटी संकरों जादू तथा अजीत-155 पर कुल 07 स्थलों में जैसिड तथा थ्रिप्स की संख्या क्रमश: आर्थिक हानि से अधिक पाई गई, जिन में से 03 गाव गुड़ाडूर, संगनाकल्लू, अमलापुरा में जैसिड संख्या तथा 04 गावों, यथा, गरालादिन्नी, मानादपूरा, कुर्डी तथा जोलादादागी में थ्रिप्स की संख्या अधिक पाई गई| चामराजनगर में 05 गावों का सर्वेक्षण किया गया| इनमें से तीन गावों, यथा, तग्गालूर, रघवापुरा तथा कालानहुंडी में बीटी संकरों मिनर्वा, बहुवलि, बायर-904,911 तथा महादेवा पर सभी स्थलों में जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड की गई|

तामिलनाडु													
पेरंबलुर	1	0	0	0	2	15	0	0	0	0	0	0	0
सलेम	13	0	3	1	5	12	0	2	0	0	0	1	1
त्रिची	5	0	0	0	0	2	0	0	0	0	0	0	1
विरडुनगर	0	0	0	0	0	0	11	3	0	0	0	0	0

फसल 25 दिनों की है| कपास बुआई का कार्य अभी भी अधिकांश क्षेत्रों में चल रहा है| विगत सप्ताह में वर्षा नहीं हुई| अचानक सूखा-काल होने के फलस्वरूप बढ़े तापमान के कारण फसल वृद्धि दुष्प्रभावित हुई| 10-15 दिनों की फसल में रिक्त स्थान भरने तथा विरलीकरण करने की सलाह दी जाती है| पेंडीमेथेलिन 30%एससी के 1.0ली/हे (3.3 लीटर वाणिज्यिक उत्पाद) का अंकुरण-पूर्ण अनुप्रयोग खरपतवार अंकुरण रोकने के लिए हाथ से बीजों के छिद्ररोपण पश्चात करने की सिफारिश की जाती है| थ्रिप्स की उपस्थिति दर्ज की गई| जड़ों में मुरझान रोग पाया गया है| इसके लिए कॉपर-आक्सीक्लोराइड @ 1.0ग्रा./ली पानी की दर से इसके घोल से प्रभावित पौधों की जड़ के आस-पास की मृदा को तर करें|

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: डॉ. उल्हास नंदनकर, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)